कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words)

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नही लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ✓

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 164/2018

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

1. प्रसंग - यह गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पंदना' से 'कर्मयोगी स्वामी केशवानंदः' शीर्षक पाठ से लिया गया है।

हिंदी अनुवाद - स्वामीजी का जीवन सभी पंथों के प्रति सद्भावना का एक उदाहरण है। यह जाट जाति में उत्पन्न हुआ परंतु सिक्खगुरु नानकदेव के पुत्र श्रीचन्द द्वारा प्रवर्तित उदासी संप्रदाय में दीक्षित हुआ। गुरु ग्रंथ का श्रेष्ठ पाठक हुआ। ग्यारह वर्षों की साधना से पृष्ठों का सिक्ख इतिहास का लेखन किया। विभाजन काल में हिंसा आचरण में घायल हुए मुस्लिम भाइयों की चिकित्सा कराई।

2. प्रसंग - यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' से 'मरुसौन्दर्य' नामक पाठ से लिया गया है।

हिंदी अनुवाद - सुन्दर स्वरूप (वर्ण) वाला मरुप्रदेश जिसके द्वारा नहीं देखा गया, उसके द्वारा कहीं पर क्या दर्शनीय देखा गया। अर्थात् कहीं पर कुछ भी दर्शनीय नहीं देखा गया। सुमेरु पर्वत के जो शिखर मरुप्रदेश में स्फुर शोभित होते हैं, उन्हें काली शिलाओं में नहीं खोजा जाना चाहिए।

4 प्रसंग:- प्रस्तुत: नाट्यांश: अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना:' इत्यस्य 'बभ्रुभस्व सिंह! दन्तान् ते गणयिष्ये' इति शीर्षक: पाठात् उद्धृत:। मूलत: पाठोऽयं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी द्वारा

महाकवि कालिदास विरचितस्य 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' इति नाटकस्य सप्तम् अंकात संकलितः। अंशेऽस्मिन बालकस्य सर्वदमनस्य व्यवहार चंचलता तापसीभ्यां सह च वार्तालापं वर्णितम्।

व्याख्या - बालकः - सिंह! मुखम् उद्घाटय! तव दन्तानां गणनां करिष्यामि।

प्रथमा - चंचलः, किमर्थं अस्माकं सन्तान तुल्यानि प्राणिनः तुदासि? ओह, तव क्रोध वर्धितः। मुनि जनेन तव नामकरणं 'सर्वदमन' इति उचितमेव कृतम्।

द्वितीया - इयं सिंही निश्चयेन भवन्तं आक्रमणं करिष्यति चेत एतस्याः शिशुं न त्यजसि।

बालः - (मन्दहासपूर्वकं) अहो, अहं तु अत्यधिकं भययुक्तं अस्मि। (इति कथयित्वा अधरोष्ठं दर्शयति)।

विशेषः - कविना बालकस्य शौर्यं प्रदर्शितवान्।
② नाट्यस्य भाषा सरल, सुबोध च अस्ति।

5 एक्षाकरण्डकम्।
① मृगाय।
② यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।
③ मधुरवाक्य भाषणेन
④ नाटकं।
⑤ चतुर्थ परिच्छेदात्।
⑥

परीक्षार्थी उत्तर

6 ततस्ते किं भूत्वा दशति?

7 भवान् किं वदति?

8 कस्य सदा विजय एव भविष्यति?

9 भवान् शुत्र अवलोक्य नन्दामि।

10 (1) पात्रापात्रविवेकोऽस्ति धेनुपन्नगयोः इव।
तृणात् संजायते क्षीरम् क्षीरात् संजायते विषम्॥

(2) यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति॥

11 (क) परोपकारस्य महत्वं
(ख) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते।
(1) गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति।
(2) नदी स्वजलं स्वयं न पिबति।
(3) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव परम् विद्यते।
(4) परेषां उपकारः परोपकारः अस्ति।
(5)

(ग) (1) वृक्षाः।
(2) सर्वे।
(3) उपकारिणी।
(4) जीवनम्।

12 (1) महा + ऋषि — गुण सन्धि
(2) शिवः + अहम् — उत्व, विसर्ग सन्धि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	13	① गायक: — अयादि सन्धि
		② शिवश्च — श्चुत्व सन्धि
	14	① विशालं भवनं — कर्मधारय
		② भरत: च शत्रुघ्न: च — द्वन्द्व
		③ प्रतिदिनं — अव्ययीभाव
	15	① 'बिना' योगे 'जलं' पदे द्वितीया विभक्ति अस्ति।
		② 'नम:' योगे 'शिवाय' पदे 'चतुर्थी' विभक्ति अस्ति।
		③ 'उपर्युपरि' योगे 'मंदिरं' पदे द्वितीया विभक्ति अस्ति।
	16	① छात्री
		② शिक्षिका
	17	① बुद्धि + मतुप
		② पर्वत + ङीप
	18	① श्व:। ② इतस्तत:। ③ अधुनैव।
	19	धनेन ग्राम: गम्यते।
	20	भगिनी वस्त्रं प्रक्षालयति।
	21	अहं नगरं गच्छामि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

22 (1) सपाद दश वादने (2) पादोन दशवादने

23 (1) कृषक: प्रात: क्षेत्रं प्रतिगच्छति।

(2) हट्टे तिस्त्र महिला: वस्त्राणि क्रीणन्ति।

(3) अहं रोटिकां खादामि।

24 सेवायाम्,
श्रीमन्त: प्रधानाध्यापक: महोदया:,
रा. मा. वि.
सुन्दरं नगरं (बीकानेरम्),

विषय:- दिनद्वयस्य अवकाशाय प्रार्थना- पत्रं।
मान्यवर:,
सविनयं निवेदनमास्ति यत् अहम् विगत दिवसात् ज्वरपीडितोऽस्मि, अस्मात् कारणात् अहं विद्यालये आगन्तुं न शक्नोमि।
अत: प्रार्थना आस्ति यत दिनांक 18-3-19 त: 19-3-19 पर्यन्तं अवकाशं स्वीकृत्य माम अनुगृहीष्यन्ति श्रीमन्त:।
सधन्यवाद!

आज्ञाकारी शिष्य:
नरेन्द्र:
दशम् (ब)

25 (1) श्व:
(2) त्वं

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(3) कदा
(4) आरभ्य
(5) स्वच्छता
(6) ~~नालीनां~~ वाभत:
(7) सुन्दरं
(8) ~~वाभत:~~ नालीनां

26 (4) (5) भिक्षाय दुग्धं रोचते।
(4) अहं गणितं विज्ञानं च पठामि।
(2) त्वं अपि गच्छ।
(1) महिला कूपं जलं आनयति।

27 (1) प्रहरत:
(2) सुन्दराणि
(3) शिवस्य
(4) निकषा
(5) तरन्ति
(6) मनोहर:

28 (1) एकदा एक: मकर: नद्यां वसति स्म।
(2) नद्या: तटे फलोपेत जम्बूवृक्ष: आसीत्।
(3) तस्य शाखायां वानर: वसति स्म।
(4) मकर वानरेण पतितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत्।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(5) " फलानि अतिमधुराणि " अत: वानर हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अत: वानरं हृदयं खादा।

(6) वानर: मकरस्य प्रयासं बुद्धि चातुर्येण विफलीकृतवा

3 प्रसंग:- प्रस्तुतपद्यांश: अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'अथ सुरभारति' इति शीर्षक पाठात् उद्धृत:। मूलत: पाठ्य कवि पुंगवेन 'डॉ. हरिराम आचार्येण विरचितायां: सरस्वतीवन्दनाया: संकलित:।
पद्येऽस्मिन् कविना विविधविशेषणै: सरस्वत्या: वन्दनां स्तुतिं च कृता।

व्याख्या:- सरस्वत्या: स्तुतिं कुर्वन् कवि कथयति यत् हे ऋषिभिर्जनैन मुनिभि: च सम्पूजित पादयुक्ता भगवति सरस्वति! भवती सर्वलोकानां शरणदात्री अस्ति। भवती नव काव्यरसै: माधुर्यदायिनी कविता द्वारा शब्दाय माना चास्ति। भवती मन्दहास युक्ता: छविरूपि आभूषण युक्ता: च अस्ति।

विशेष:- (1) कविना भगवतिसरस्वतीं प्रति भक्तिभावं प्रकटितम्
(2) पद्यस्य भाषा सरला सरसा मधुरा चास्ति।

समाप्त